ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

एक स्वास्थ्य में पशुधन की भूमिका

डॉ. ममता, डॉ. अजय कुमार, डॉ. रजनीश सिरोही, डॉ. दीप नारायण सिंह एवं डॉ. यजुवेन्द्र सिंह
पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय मथुरा

एक स्वास्थ्य,वन हेल्थ, मनुष्यों, पौधों, पशुओं और उनके साझा पर्यावरण के मध्य परस्पर सम्बन्ध को पहचान कर बेहतर स्वास्थ्य परिणामों के लिए सभी स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता पर बल देता है। वन हेल्थ एक ऐसा दृष्टिकोण है जो यह मानता है कि मानव स्वास्थ्य ,पशु स्वास्थ्य और हमारे चारों ओर के पर्यावरण के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। वन हेल्थ का सिद्धांत संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन, विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन के त्रिपक्षीय-प्लस गठबंधन के बीच हुए समझौते के अंतर्गत एक पहल है।इसका उद्देश्य मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य, पौधों, मिट्टी, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र जैसे विभिन्न विषयों के अनुसंधान और ज्ञान को कई स्तरों पर साझा करने के लिये प्रोत्साहित करना है , जो सभी प्रजातियों के स्वास्थ्य में सुधार, उनकी रक्षा व बचाव के लिये जरूरी है।

पशुधन जहाँ खाद्य सुरक्षा व्यवस्था के लिए आवश्यक घटक हैं, साथ ही अपने उत्पाद और सह उत्पादों जैसै कि, प्राकृतिक उर्वरक के कारण आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के लिए पशुधन एक महत्वपूर्ण संपत्ति है। विश्वस्तर पर लगभग **500** मिलियन पशुपालक भोजन और आय के लिए पशुधन पर निर्भर हैं। कठोर वातावरणीय क्षेत्रों में जैसे कि पहाड़ों , शुष्क क्षेत्रों आदि में स्थानीय समुदायों की निर्भरता और भी अधिक हो जाती है। जनसँख्या वृद्धि के साथ बढ़ती हुई आय , बढ़ती मांग, बदलते आहार ने पशुधन के क्षेत्र में विभिन्न आयामों का मार्ग खोला है। किन्तु यदि इसका ठीक से प्रबंध नहीं किया जाए तो यह पर्यावरणीय प्रभावों और सार्वजानिक स्वास्थ्य जैसे विषयों की स्थिरता को प्रभावित कर सकता है।

इस प्रकार विकास के साथ होने वाले परिवर्तन पशुधन क्षेत्र को अधिक सतत विकास और मानव आहार में बेहतर योगदान की ओर ले जाने का अवसर प्रदान करते हैं। यह आवश्यक है कि उत्पादकता के स्तर और व्यवस्थाओं को इस प्रकार प्रबंधित किया जाये कि वह भूमि ,पानी, और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव के साथ साथ पशु और मानव स्वास्थ्य के लिए उत्पन्न जोखिमों को सम्बोधित करता हो।

वर्तमान में पशुधन क्षेत्र से **7.1 GT CO2**-संतुकी उत्सर्जन अनुमानित है। यह उत्सर्जन मानवीय गतिविधियों से प्राप्त ग्रीन हाउस गैसेस के उत्सर्जन का **14.5**% है। ऐसे में ग्रीन हाउस गैसेस के उत्सर्जन की वृद्धि को सीमित करने के लिए आवश्यक है पशुधन आपूर्ति श्रृंखलाओं की दक्षता बढ़ाई जाए।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

हाल के वर्षों में एक स्वास्थ्य का यह विषय और अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है क्योंकि कई कारणों ने लोगों, जानवरों, पौधों और हमारे पर्यावरण के बीच पारस्परिक प्रभाव को बदल दिया है। बढ़ती मानव आबादी और नए भौगोलिक क्षेत्रों का विस्तार हो रहा है, जिसके कारण जानवरों तथा उनके वातावरण के साथ निकट संपर्क की वजह से जानवरों द्वारा मनुष्यों में बीमारियों के फैलने का खतरा बढ़ रहा है। मनुष्यों को प्रभावित करने वाले संक्रामक रोगों में से **65**% से अधिक जूनोटिक रोगों (पशु जनित मानव रोग) की उत्पत्ति के मुख्य स्रोत जानवर हैं। पर्यावरणीय परिस्थितियों और आवासों में व्यवधान जानवरों में रोगों का संचार करने के नए अवसर प्रदान कर सकता है। अंतर्राष्ट्रीय यात्रा व व्यापार के कारण लोगों, जानवरों और पशु उत्पादों की आवाजाही बढ़ गई है, जिसके कारण बीमारियाँ तेजी से सीमाओं एवं दुनिया भर में फैल सकती हैं।

कोरोना वायरस महामारी से हुए जान माल की व्यापक क्षति के परिणाम देखकर यह निश्चित है कि , एक स्वास्थ्य को अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए दृष्टिकोण और कार्यशैली में बदलाव की आवश्यकता है। सार्वजानिक स्वास्थ्य, पशु चिकित्सा सेवाओं, या पर्यावरण प्रबंधन के आधार पर पारम्परिक, समानांतर, क्षेत्रीय दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है। केवल रोग केंद्रित दृष्टिकोण न हो , अपितु एक सिस्टम आधारित बदलाव हो, जोकि प्रक्रियाओं के हर स्तर पर जैसे की व्यवस्था , तकनीक आदि अपनाने और सीखने सूचनाएं साझा करने के लिए नवाचार के विचार पर बल देता है। एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण मनुष्यों , पशुओं और पर्यावरण के लिए बेहतर परिणामों के लिए सभी क्षेत्रों और पैमानों पर कार्य करता है।

पशुधन आज भी विश्व की एक बड़ी आबादी की जीवन रेखा है , जिस पर वे खाद्य , पोषण और आजीविका के लिए निर्भर हैं। किन्तु साथ ही पशुधन मनुष्य और पर्यावरण के स्वास्थ्य के लिए कब कोई खतरा खड़ा कर दे, हम ऐसी परिस्थिति से विमुख होकर नहीं रह सकते। और कोरोना ने हमे यह स्पष्ट कर दिया है कि किसी रोग को किसी कोने तक सीमित कर पाना और वैश्विक महामारी न बनने देना एक बहुत ही बड़ी चुनौती है। वैज्ञानिकों के अनुसार , वन्यजीवों में लगभग **1.7** मिलियन से अधिक वायरस पाए जाते हैं, जिनमें से अधिकतर के जूनोटिक (पशु जनित मानव रोग) होने की संभावना है। इसका तात्पर्य है कि समय रहते अगर इन वायरस का पता नहीं चलता है तो भारत को आने वाले समय में कई महामारियों का सामना करना पड़ सकता है। रोगों की एक अन्य श्रेणी ''एंथ्रोपोजूनोटिक'' है, जिसमें मनुष्यों से जानवरों में संक्रमण फैलता है। हाल के वर्षों में वायरल के प्रकोपों जैसे कि निपाह वायरस, इबोला, सिवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम , मिडिल ईस्ट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम और एवियन इन्फ्लुएंजा का संक्रमण यह अध्ययन करने पर मजबूर करता है कि हम पर्यावरण , पशु एवं मानव स्वास्थ्य के अंतर्संबंधों की जाँच करें और समझें।वैश्विक स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए , विशेषकर कम आय वाले देशों में पशुपालन सम्बन्धी स्थिर व्यवस्थाओं को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पशुपालन में अधिक कुशल , सुरक्षित और टिकाऊ प्रणालियों का प्रयोग और समर्थन करके ही हम एक स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने में सक्षम हो सकेंगे।

पशुपालन और मत्स्य पालन में अनावश्यक और अनियंत्रित दवाओं का प्रयोग रोगाणुरोधी प्रतिरोध के प्रसार का एक बड़ा कारण बनता जा रहा है जिसका क्रम यदि यही चलता रहा तो यह एक स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनकर खड़ा होगा।

विकासशील दिशा निर्देश अनौपचारिक बाजार और स्लॉटर हाउस ऑपरेशन्स जैसे , निरीक्षण, रोग प्रसार आकलन आदि, के लिए सर्वोत्तम दिशा निर्देशों का विकास करना और ग्रामीण स्तर पर प्रत्येक चरण में वन हेल्थ के संचालनके लिए तंत्र बनाना। पशुओं के स्वास्थ्य और उनके कल्याण में किये गए निवेश से पशुपालको के जीवन और आजीविका में सीधे तौर पर लाभ प्राप्त होता है। अच्छा पशु स्वास्थ्य और पशु कल्याण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं को व्यापारिक प्रतिबंधों से भी सुरक्षित रखता है।

रोगों की निगरानी को समेकित करना , मानवीय स्वास्थ्य सुरक्षित और बेहतर तब होगा जब उनके पशुधन और आस पास के पशु स्वस्थ होंगे। जूनोटिक रोगों (पशु जनित मानव रोग) का जल्दी पता लगाना और उनके फैलने से पहले प्रभावी ढंग से उन्हें प्रबंधित करना आवश्यक है। मौजूदा पशु स्वास्थ्य और रोग निगरानी प्रणाली जैसे-पशु उत्पादकता और स्वास्थ्य के लिये सूचना नेटवर्क एवं राष्ट्रीय पशु रोग रिपोर्टिंग प्रणाली को समेकित करने की आवश्यकता है। पशुधन और पर्यावरण के स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है कि पशुधन और वन्यजीव संपर्क में एक सकारात्मकता हो , जिससे पर्यावरण के खतरों को काम किया जा सके और साथ ही मिट्टी , जैव विविधतता और कार्बन प्रच्छादन आदि में भी सकारात्मक प्रभाव दिखाई दे।

समग्र सहयोग वन हेल्थ के अलग अलग आयामों को संबोधित करना , इसे लेकर मंत्रालयों से लेकर स्थानीय स्तर पर भूमिका को रेखांकित कर आपस में सहयोग करना , इससे जुड़ी सूचनाओं को प्रत्येक स्तर पर साझा करना इत्यादि पहल की आवश्यकता है।हमारे स्वास्थ्य में सुधार तब होता है जब निर्णयों में सभी दृष्टिकोण सम्मिलित हों। निवेश में यदि महिलाओं कि भागीदारी भी सुनिश्चित की जाए और सभी को साथ लेकर चला जाए तो सफलता कि सम्भावना बढ़ जाती है।